भीष्म साहनी : एक परिचय

रावलपिंडी, पाकिस्तान में जन्मे भीष्म साहनी (8 अगस्त 1915- 11 जुलाई 23) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद भीष्म साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। भारत-पाकिस्तान विभाजन के पूर्व अवैतनिक शिक्षक होने के साथ-साथ वे व्यापार भी करते थे। विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचारपत्रों में लिखने का काम किया। बाद में भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जुड़े। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर बने। 1957 से 1963 तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (फॉरेन लॅग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस) में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे। यहां उन्होंने करीब दो दर्जन किताबों का हिंदी में रूपांतर किया। 1965 से 1967 तक दो सालों में उन्होंने नयी कहानियां नामक पात्रिका का सम्पादन किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो-एशियायी लेखक संघ (एफ्रो एशियन राइटर्स एसोसिएशन) से भी जुड़े रहे। 1993 से 97 तक वे साहित्य अकादमी के कार्यकारी समिति के सदस्य रहे। उन्हें 1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1975 में शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 198 में एफ्रो एशियन राइटर्स एसोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया।

'तमस' पढ़ते हुए

अजय चंद्रवंशी
राजमहल चौक, फुलवारी के सामने
कवर्धा, जिला- कबीरधाम (छ.ग.)
मो. 9893728332

'तमस' बीसवीं शताब्दी के श्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है। इस उपन्यास को पढ़ना एक त्रासदी से गुजरना है। इसको पढ़ने से पता चलता है, स्वतंत्रता से ठीक पूर्व देश की स्थिति कितनी भयानक हो चली थी, साम्प्रदायिकता कैसे मानवता को तार-तार कर देती है, जहां आदमी को अपने पास-पड़ोस के लोग ही, जिनके साथ वह पला-बढ़ा होता है, दुश्मन नजर आने लगते हैं, जहां दूसरे धर्मों की स्त्रियों का बलात्कार, हत्या, बच्चों-बूढ़ों की हत्या का 'धर्मयुद्ध' घोषित किया जाता है। लेखक ने ठीक ही लिखा है ''लड़ने वालों के पांव बीसवीं सदी में थे, सिर मध्ययुग में।'' आज की स्थिति में कोई बदलाव नज़र नहीं आता।

इन साम्प्रदायिक दंगों के पीछे ब्रिटिश सरकार की फूट डालो और शासन करो की नीति की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। वह स्वतंत्रता की मांग से ध्यान हटाने के लिए साम्प्रदायिक झगड़े को मौन प्रोत्साहन प्रदान करती थी, जिसे रिचर्ड के व्यवहार के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है। लेकिन इन दंगों के पीछे एकमात्र ब्रिटिश सरकार नहीं थी। एक तो मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक राजनीति- ''ले के रहेंगे पाकिस्तान,'' जो खुद को